MODERN POETRY IN HINDI

Study material

VI SEMESTER

B.A HINDI

CORE COURSE

(2011 ADMISSION)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

THENJIPALAM, CALICUT UNIVERSITY P.O., MALAPPURAM, KERALA - 693 635

181

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Study material

VI SEMESTER

B.A HINDI

CORE COURSE

MODERN POETRY IN HINDI

Prepared by

DR. V.K.SUBRAMANIAN
ASST. PROFESSOR
DEPARTMENT OF HINDI ,
UNIVERSITY OF CALICUT

Scrutinised by :

Dr. PAVOOR SASHEENDRAN (Retd.)
38/1294, APPUGHAR,
EDAKKAD P.O.,
CALICUT

Type settings & Lay out
Computer Section, SDE

©
Reserved

Module - I

मनुष्यता

कवि परिचय मैथिली शरण

मैथिली शरण गुप्त राष्ट्रकवि हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव नामक स्थान पर हुआ। चिरगाँव झांसी जिले में आता है। उनका जीवनकाल सन् १८८६ ई. से लेकर सन् १९६४ ई. तक है। वे बड़े रामभक्त थे। वैष्णव भक्ति का संस्कार उनके व्यक्तित्व में पाया जाता है। वे राज्यसभा के सदस्य भी रहे हैं। उन्हें पद्मभूषण पुरस्कार मिला है। वे द्विवेदी युग के कवि थे। खड़ीबोली को कविता की भाषा बनाने में उनका योगदान रहा है। आचार्य शुक्ल जी ने उन्हें हिन्दी के प्रतिनिधि कवि कहा है। उनकी कृतियों में स्वदेश प्रेम की भावना रहती है। गुप्त जी की प्रसिद्ध कृतियाँ ये हैं - रंग में भंग, भारत - भारती, किसान, पंचवटी, जयद्रथ वध, साकेत, यशोधरा आदि।

गुप्तजी नवजागरण के कवि थे। आज़ादी का बोध जनता में जगाने के लिए उनके काव्य सहायक रहे हैं। उनकी कविताओं में उद्बोधन का स्वर मुखरित है। वे भारतीय परंपरा के सशक्त वक्ता भी थे। उन्होंने जनता की भावना को राष्ट्रीयता के अंदर रखा। विश्वबन्धुत्व की ओर वे उन्मुख थे।

मनुष्यता शीर्षक कविता उनकी एक प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में त्याग और बलिदान के बारे में वे कहते हैं। मनुष्य को कर्मरत जीवन जीने का संदेश यह कविता देती है।

कवि उद्बोधन करते हुए यह कहते हैं कि मृत्यु से मत डरो। मर्त्य का मतलब ही मरनेवाला है। अर्थात् मनुष्य के रूप में जो जन्म लेता है वह एक दिन मर जाता है। मरना है तो ऐसा मरो कि याद सभी करें। मरना एक यादगार बने। मनुष्य की सु-मृत्यु होनी चाहिए। मृत्यु बेकार न हो जाए। जो बेकार मरता है उसका जीवन भी उपयोगहीन बनता है। वह कभी भी अपने आपके लिए नहीं जिया है। इस प्रकार का जीवन जानवरों का है।

यह पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

जानवर अपने लिए चरता है न कि दूसरों के लिए। मनुष्य वही होता है जो मनुष्य के लिए मरता है।

कवि का कथन काफी अर्थवान है। मनुष्य के जीवन के लिए अर्थ होना चाहिए। जीवन जानवर का जैसा जीना नहीं चाहिए।

कवि कहते हैं कि जो मनुष्य के लिए मरता है वह उदार है। उसकी कथा सदा याद की जाएगी। उसकी कथा से धरा भी धन्य बन जाएगी।

उसी उदार की कथा सरस्वति बखानती

उसी उदार में धरा कृतार्थ भाव मानती।

उसकी कीर्ति का गायन हमेशा होगा। समस्त सृष्टि उसकी पूजा करेगी। उसका आत्मभाव समस्त संसार में फैल जाएगा। अतः मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मृत्यु का वरण भी अगर करना चाहे तो आदमी के लिए करें, बेकार न मरें। क्योंकि जीवन का अर्थ सु-मृत्यु में होता है।

कवि कहते हैं कि जीवन के प्रति सहानुभूति दिखाइए। वास्तव में सहानुभूति सबसे महान विभूति है। धरती हमेशा उसके लिए वशीकृता बनकर रहती है। महात्मा बुद्ध दया, करुणा, ममता आदि के लिए प्रसिद्ध है। उनके सामने सबकुछ नतमस्तक रहते हैं। दुनिया भगवान बुद्ध के करुणामय संदेश के आगे विनीत हुई। जो परोपकार करता है वही सबसे बड़ा उदार बनता है। उदार व्यक्ति की मृत्यु मनुष्य के लिए होती है।

अहा वह उदार है परोपकार जो करें

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

कहने का मतलब यह है कि परोपकार, दया, सहानुभूति आदि जिसके जीवन में रहती है उसका जीवन धन्य होता है।

अंतरिक्ष अनंत है। अंतरिक्ष में कई देवता खड़े हैं। वे अपने बड़े-बड़े बाहुओं से हमें स्वीकार करने के लिए खड़े हैं।

अनंत अन्तरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,

समाज ही स्वबाहू जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े

आपस में आश्रित रहकर अब सब जाग उठे और आगे बढ़ें। देवों के हाथों में अकलंकित बनकर चढ़ जाओ। एक भी व्यक्ति ऐसा न रहे कि वह दूसरों के काम से विमुख हो। वास्तव में ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ है जो मनुष्य के लिए मरता है।

कहने का आशय है कि मृत्यु भी श्रेष्ठ बने। क्योंकि श्रेष्ठ मृत्यु जिसकी होती है उसको स्वीकार करने के लिए देवता उसके समक्ष खड़े होते हैं।

हमारा विवेक यह कहता है कि मनुष्य के साथ आप बन्धुत्व रखिए। क्योंकि बन्धुत्व ही हमारा एकमात्र बन्धु है। एक ही परम पिता से सबका जन्म हुआ है। भेद सब बाहर हैं वे अपने कर्म कारण बने हैं। अंतर्तत्व सबका अनेक नहीं, एक है।

फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,

परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत भेद हैं।

बन्धु की व्यथा दूर करना चाहिए, ऐसा न करना अनर्थ है। मनुष्य माने वही है जो मनुष्य के लिए मरता है।

कहने का मतलब है कि मनुष्य एक ही परम पिता का अंश है। अतः सभी एक दूसरे के लिए बन्धु है और प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे के लिए जीना चाहिए।

कवि का कहना है कि हम अपने इष्ट मार्ग पर चले। हम खुशी के साथ खेलते हुए चलें। हमारे सामने अगर विघ्न है तो उन्हें दूर करके चलने का कार्य करे। कभी आपसी मेल-मिलाप न नष्ट हो जाए। आपसी भिन्नता न बढ़ें। एक जुटकर चलें। सभी को पार कराएँ और स्वयं पार करें। मनुष्य का जीवन तभी सार्थक बनता है जब वह मनुष्य के लिए मरें।

तभी सार्थक भाव है कि तारता हुआ तरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरें।

कहने का तात्पर्य है कि जीवन की सार्थकता दूसरों के लिए जीने और मरने में हैं।

वास्तव में जीवन के प्रति सकारात्मक रहने का आह्वान कविता के द्वारा दिया गया है। जीवन, एक दिन बेकार मर जाने के लिए नहीं है। अधिकांश लोगों के जीवन बेकार मर जाने के लिए बने हैं, वे ऐसे ही खत्म हो जाते हैं। जो व्यक्ति जीवन के प्रति स्वतंत्र दृष्टा नहीं है वह एक दिन ऐसा मरेगा जैसा जानवर मरता है। स्वार्थी के लिए जीवन का कोई मतलब नहीं होता है। उसके जीवन का अर्थ एक दिन मर जाने से परे कुछ भी नहीं है। इसे हम अर्थहीन मृत्यु कहकर पुकार सकते हैं। उसका जीवन दरअसल अबोध में चलता है। जो सुबोध में जीवन बिताता है उसकी मृत्यु बेकार नहीं होती है। जो सारवान जीवन जीता है वह मनुष्य है और उसका मरना मनुष्य के लिए होता है।

कविता का सार श्रेष्ठ है। यह कालातीत और देशातीत है। महान कवि की कविता, अखण्ड काल – देश दृष्टि रखती है।

कर्मवीर

कवि परिचय — श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध

अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध द्विवेदी युग के प्रतिष्ठित कवि है। उन्होंने राष्ट्रीय जागरण पर अनेक कविताएँ लिखी हैं। भारतीय संस्कृति की गरिमा उनकी कृतियों में सर्वत्र आयी है। वे कवि होने के साथ साथ उपन्यासकार, आलोचक एवं इतिहासकार हैं। इनके काव्य ग्रंथों के नाम हैं – चुभते- चौपदे, चोखे चौपदे, बोलचाल, रसकलस तथा वैदेही वनवास। प्रियप्रवास खड़ीबोली में लिखा गया प्रथम महाकाव्य है। इन्होंने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों में रचनाएँ की हैं।

'कर्मवीर' कविता अपने समय के मद्देनज़र लिखी गयी है। उस समय देश आज़ादी की लड़ाई लड़ रहा था। इस ऐतिहासिक समय में देश को कर्मवीरों की ज़रूरत थी। कर्मवीर को पहचानने और उसे परिभाषित करने का प्रयास इसमें हुआ है। कवि की दृष्टि में कर्मवीर वही है जिसके हाथ में कार्बण हीरा बनता है और काँच उज्वल रत्न बनता है। कवि का कहना है कि कर्मवीर साधारण सृष्टि नहीं है, उनकी विशेषता यह है कि वे अपने सामने आनेवाली बाधाओं से डरते नहीं हैं। वे दुख आने पर पचताते नहीं हैं। काम को कठिन देखकर छोड़ते नहीं हैं। भीड़ में कभी उनको चंचल बनते दिखाई नहीं पडता है। उनका व्यक्तित्व देशातीत और कालातीत है। वे अपने काम को स्थगित नहीं करते हैं। वे सिर्फ बोलते नहीं, काम करके दिखाते हैं यानी करनी में भरोसा रखते हैं। उनका स्वभाव है कि वे दूसरों को सुनते हैं, पर काम करते हैं अपनी मर्जी से। इस जगत में वे अपना मददगार आप ही मानते हैं। दूसरों पर कभी आश्रित रहना वे नहीं चाहते हैं। उनके सामने ऐसा कोई काम नहीं है वे कर नहीं सकते हैं।

भूलकर वे दूसरों का मूँह कभी ताकते नहीं
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं

वे उस काम को कर दिखाते हैं जो साधारण लोग कर नहीं सकते हैं जैसे पर्वत को काटकर सड़क बनाना, मरुभूमियों में नदियाँ बहाना, जंगलों में मंगल रचा देना आदि। वे नभ तक पहूँचे हैं और अनेकों खोजों को किया है जो पहले आसाध्य समझी जाती थीं।

कर्मवीर काम जहाँ भी हो वहाँ जाकर करते हैं। असंभव शब्द उनके लिए अपरिचित है। वे दृढ़ निश्चय लेकर जाते हैं। वे अपना काम करने के बाद ही वापस आते हैं –

डाल देते हैं विरोधी सैकड़ों ही अड़चने
वे जगह से काम अपना ठीक करके ही टले

कर्मवीर अपनी बुद्धि से काम चलाते हैं, जैसे सामने रुकवट खड़ा करके कोई पर्वत खड़ा हो तो वे वहाँ युक्तियों का उपयोग करते हैं और बाधा हटा देते हैं। इसी प्रकार समुद्र सामने हैं तो भी वही करते हैं। वन, व्योम आदि में भी वे बाज़ीगरी करते हैं। वे अजीब काम करके दिखाने में उत्सुक हैं।

कर्मवीर के द्वारा कई देश फूले-फले हैं। उनके पास निर्लोभतः सभी प्रकार के विभव रहते हैं। ये सभी कर्मवीर के पैदा होने के कारण साध्य हुए हैं। कर्मवीर पैदा होते हैं समय की माँग के अनुसार और उनसे देश और जाति की भलाई ही होती हैं –

लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी
देश की और जाति की होगी भलाई भी तभी

कर्मवीर का चरित्र विशेष का है। वे काम को आरंभ करके कभी ऐसे ही नहीं छोडते याने अगर वे काम शुरू करते हैं तो उसको पूरा किए बिना नहीं छोड़ते हैं। अगर वे किसी का सामना करेंगे ही तो भूलकर भी वापस नहीं आएँगे। वे बेकार बातें नहीं करेंगे। जैसा कि हमें यह मालूम हैं, कोयला से हीरा बनता है। कर्मवीर के हाथ का कोयला हीरा बनेगा। वे काँच को उज्वल रत्न ही बना देंगे।

यह कविता कर्मवीर का चरित्र बताती हैं। उस समय देश को कर्मवीर की आवश्यकता थी। जब यह कविता लिखी गयी थी तब भारत आज़ादी की लड़ाई लड़ रहा था। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए आह्वान के रूप में कवि ने यह कविता प्रस्तुत की है। कविता के द्वारा लोगों के अन्दर सोए पड़े कर्मवीरों को जगाने का उद्देश्य कवि का है।

सरल भाषा का उपयोग करके कर्मवार जैसे गम्भीर विषय की प्रस्तुति की गयी है। कविता की शैली लोगों को जाग्रत करने में सहायक हैं। शिल्प की दृष्टि से भी कविता सफल निकली है।

Module - II

मौन-निमंत्रण

कवि परिचय सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत उत्तर प्रदेश के 'कौसानी' से है। 'कौसानी' अल्मोडा जिले का बहुत सुन्दर स्थान है। उनका बचपन माँ के अभाव में बीता। आज़ादी की लड़ाई में वे भी शामिल हुए थे। वे छायावादी कवियों के चार स्तंभों में एक है। अन्य तीन कवि ये हैं – निराला, महादेवी वर्मा और जयशंकर प्रसाद।

वे सुकुमार कवि थे। इनकी कविताओं में अधिकांश छायावादी प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं। चित्रात्मक भाषा इनकी कविता की विशेषता है। स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह इनकी कविताओं में पाया जाता है। प्रकृति सौन्दर्य के धनी है इनकी कविताएँ। पंतजी समय समय पर अपने दृष्टिकोण में भी परिवर्तन लाते रहे। पहले वे छायावादी थे, फिर प्रगतिवादी (Progressive) बने, बाद में आध्यात्मवादी रहे। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, लोकायतन, चितंबरा आदि।

मौन- निमंत्रण जागरण की कविता है। अज्ञात निमंत्रण कविता का कथ्य है। सबसे बड़ा निमंत्रण प्रकृति की ओर से होता है। जो इस निमंत्रण को पहचानता है उसका जीवन त्योहार की तरह बन जाता है। कवि मौन निमंत्रण के द्वारा मनुष्य के साथ प्रकृति के सूक्ष्म सम्बन्धों को पकड़ते हैं। वे अपनी असीम कल्पना के द्वारा इस संबन्ध को पंक्तिबद्ध करते हैं।

कवि कहते हैं कि जब संसार स्तब्ध ज्योत्सना में निष्कलंक बच्चे के समान चकित होकर रहता है और विश्व के सुन्दर पलकों पर स्वप्न-अजान (unknown dream) विरचते हैं तब पता नहीं नक्षत्रों से कोई मुझे मौन होकर बुलाता है।

नीला आकाश घने मेघों से भरा है। अंधकार में मेघ गरजता है।

सघन मेघों का भीमाकाश

गरजता है जब तमसाकार।

हवा लम्बे लम्बे निश्वास भरती है। धरती पर पानी प्रखर बरसता है। इस समय बिजली की चमक में कोई इंगित कर मुझे मौन निमंत्रण देता है।

धरती यौवन से भरी हुई है। इसे देखकर वसंतकाल खुशी से भर गया। कलियाँ दीर्घनिश्वास के साथ खिल उठीं जैसे विधुर आदमी अपनी प्रियतमा की याद में निश्वास करता है।

विधुर उर के से मृदु उद्‌गार

कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छ्‌वास।

इस समय सौरभ के बहाने मुझे कोई मौन संदेश भेजता है।

समुद्र जब क्षुब्ध हो जाता है तब समुद्र में फेन पैदा होते हैं। समुद्र, फेन का व्याकुल संसार बन जाता है और पानी के बुदबुदे कहीं अनजाने ही बिखर जाते हैं। अब समुद्र के लहर से उठकर कोई अज्ञात मौन-बुलावा मुझे दे रहा है।

उठा तब लहरों से कट कौन
न जाने मुझे बुलाता मौन

स्वर्ण, सुखद, रंग में और सौरभ में विश्व को जब प्रभात डुबा देता है और चिड़ियों के समूह का कूजन धरती और आकाश को मिला देता है तब मेरे आलस पलकों को कोई आकर खोल देता है मौन।

न जाने अलस-पलकदल कौन
खोल देता मेरे मौन

घने अंधकार के साथ मिलकर जब संसार ऊँघता है और भयभीत झींगुर की आवाज़ वीणा की तंद्रा के समान कंपायमान है।

भीरु-झींगुर कुल की झनकार
कँपा देती तंद्रा के तार

अब न जाने खद्योता के बहाने कौन मुझे मौन होकर पथ दिखाता है।

स्वर्ण की शोभा में प्रभात आ जाता है। इस समय सारे संसार में प्रकाश फैल जाता है। सारी कलियाँ भ्रमरों के गुंजन सुनकर खिल जाती है।

सुरभी पीड़ित मधुपों के बाल
तड़पे, बन जाते हैं गुंजार

इस ढुलकते ओस में कोई अज्ञात मेरी आँखों को मौनतः आकर्षित करता है।

चारों ऑर कर्म का अति-भार भरा पड़ा है। याने व्यस्त दिन का सुवर्ण अंत हो रहा है। कठिन मेहनत करनेवाले, शून्य शय्या पर आश्रय ले रहे हैं। इन सबसे मेरा प्राण आकुल बन जाता है। इस समय स्वप्न में आकर कोई मुझे सुन्दर धरती पर मौन होकर फिराता है।

न जाने, मुझे स्वप्न में कौन
फिराता, छापा जग में मौन

इस प्रकार अनेकों बहानों से मुझे निमंत्रण देनेवाला अरे प्रकाशमान शक्ति तुम कौन हो? मुझे अबोध और अज्ञान जानकर अज्ञात पथों को सुझाते हो और मेरे जीवन रूपी मुरली के छिद्रों में गान फूँक देते हो। ऐसा करनेवाले तुम कौन हो? मेरे सुख और दुःख में साथ देने वाले अरे! तुम कौन हो? क्या यह नहीं कह सकती है?

अहे सुख-दुख के सहचर मौन!
नहीं कह सकती तुम हो कौन!

इस कविता में कवि उस अज्ञात शक्ति की तलाश करते हैं जो निमंत्रण देती रहती है। कवि काफ़ी उत्साहित है, यह जानने के लिए कि वह कौन है जो उन्हें सदा निमंत्रण देता है। वास्तव में वह अज्ञात शक्ति उन्हें जीवन की ओर निमंत्रण दे रही है। निमंत्रण अक्सर जीवन को उत्साही बना देता है। प्रकृति, और कुछ नहीं है बल्कि मनुष्य के लिए एक बड़ा निमंत्रण है। इसे कवि जानता है और उस निमंत्रण के प्रति कुतूहल रहते हैं, साथ ही साथ जीवन को सकारात्मक दिशा की ओर बढ़ाते हैं।

सुकुमार भाषा इस कविता के शिल्प की विशेषता है। विचित्र बिम्बों में विषय वस्तु साकार होकर आती है। आत्मा और परमात्मा के संबंध को काव्य शिल्प ने स्पष्ट किया है।

मैं नीर भरी दुःख की बदली

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री है। ये फरूखाबाद से है। इनका जीवन काल सन् 1907 ई. से 1987 ई तक है। संस्कृत में उन्होंने एम. ए किया और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य रहीं। इनका काव्य क्षेत्र विशाल है। राष्ट्रीय जागरण और सामाजिक सुधार में इनका योगदान रहा है। गीत लिखने में वे माहिर थी। उनके गीतों की लोकोत्तरता को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी माना है। आनंद और विषाद का संयोग इनके काव्य की विशेषता है। कविता के अलावा रेखाचित्र भी इनकी ओर से लिखा गया है। 'स्मृति की रेखाएँ', इनकी प्रसिद्ध रेखाचित्र है। इसके अलावा महादेवी की प्रसिद्ध कृतियाँ ये हैं- नीहार, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपाशिखा आदि काव्य संग्रह है। 'अतीत के चलचित्र' (रेखाचित्र), पथ के साथी, मेरा परिवार (संस्मरण), श्रृंखला की कड़ियाँ (निंबंध) आदि।

महादेवी की कविता में करुणा का भाव भरा पड़ा है। पीडा, वेदना, एवं उल्लास का संयोग इनकी कविताओं का विशेष स्वर है। अज्ञात प्रियतम की आकांक्षा इनकी कविता में मिलती है। इनकी कविता में रहस्यवादी चिंतन भी रहता है।

कवयित्री कहती है कि संसार के हर स्पन्दन में चिन्मय शक्ति का वास है। मेरे क्रन्दन में आहत विश्व हँसता है। नयनों में दीपक के समान ईश्वर जलते हैं और पलकों में निर्झरिणी सी बहती है। मेरे साथ ईश्वर रहने के कारण मेरा हर कदम आह्लाद से भरा है। मेरे निश्वासों में स्वप्नरूपी पराग हमेशा झरते हैं।

मेरा पग पग संगीत भरा
श्वासों में स्वप्न-पराग झरा

नभ की सीमा पर नए रंग बुने जाते हैं और सब कहीं मलयानिल बहता है। मैं क्षितिज की भृकुटि पर घिरे हुए मेघ के समान हूँ और अविरल चिंता का भार बनी हूँ।

मैं क्षितिज-भृकुटि पर चिर धूमिल
चिंता का भार बनो अविरल

मैं रण-कण पर बरसा जल कण बनी हूँ और नवजीवन का अंकुर बनकर निकली हूँ।

है, भगवान, मेरे पास आप इस प्रकार आएँ जिससे पथ मलिन न हो जाए और ऐसा आना कि कोई पदचिन्ह शेष न रहे। जग में मेरे आगमन का बोध मुझे हुआ है और सुख की सिहरन विकसित हुई है

सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अन्त खिली

विशाल आकाश का कोना मेरा अपना कभी बने। मैं बादल के समान मिटना चाहती हूँ। मेरा परिचय इतना काफ़ी है और मेरा इतिहास भी इतना ही बस। कल मैं उमड़ी थी और आज मिट गयी हूँ।

परिचय इनता इतिहास यही
उमडी कल थी मिट आज चली।

कवयित्री इस कविता में आत्मा और परमात्मा के मिलन को बता रही है। वे कई संकेतों में इसे प्रकट कर रहे हैं। वास्तव में आत्मा नीर भरी दुःख की बदली है। जब बादल बरसते हैं तब बादल का अस्तित्व मिट जाता है। बादल का इतिहास तब तक रहता है जब तक वह बरसता नहीं है। कवयित्री इस कविता के माध्यम से उस सत्य की ओर इशारा करती है कि जब तक हम अपने अहं के साथ रहते हैं तब तक ईश्वर के साथ साक्षात्कार संभव नहीं हैं। जब सुधि आ जाती है तब हम अहं के विसर्जन का अनुभव कर सकते हैं और भगवान के साथ एकाकार की स्थिति में पहुँचते हैं। ऐसा, इस कविता में रहस्यवाद स्पष्ट हुआ है। यह कविता छायावादी शिल्प में पैदा हुई है। इसकी भाषा सांकेतिक है। आध्यात्मिक अनुभवों को स्पष्ट करने में इसका शिल्प सक्षम है।

जनतंत्र का जन्म

रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह दिनकर बिहार राज्य से है। उनका गाँव सिमरिया है जो 'बेगूसराय' जिले में आता है। वे गरीब परिवार से आए हैं। उन्होंने कई नौकरियाँ की है। बाद में वे विश्वविद्यालय के आचार्य बने। राज्यसभा के सदस्य भी रहे हैं। 'संस्कृति के चार अध्याय' उनकी प्रसिद्ध कृति है जिसे साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। 'उर्वशी' शीर्षक काव्य पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। 'दिनकर' छायावादोत्तर कवि माने जाते हैं। इस समय हिन्दी कविता नयी मोड ले रही थी। यह कविता के लिए नवजागरण का समय था। सर्वत्र राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित था। इस समय प्रगतिवादी प्रवृत्तियाँ कविता में आयीं। इस समय सामंतवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनता के बीच आवाज़ उठीं। दिनकर के कवित्व ने सत्य एवं न्याय की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष का मार्ग दिखाया है। दिनकर की प्रसिद्ध रचनाएँ ये हैं- रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, 'उर्वशी', संस्कृति के नए अध्याय आदि।

इस कविता में राष्ट्रीय मुक्ति की भावना का स्वर मुखरित है। जनतंत्र के प्रति प्रबल आग्रह कविता में प्रतिष्ठित हुआ है। कवि का सपना सर्वहारा के द्वारा देश में राज किए जाने का है। जनतंत्र के द्वारा व्यापक परिवर्तन के आकांक्षी है कवि। यह कविता जनता में नयी चेतना और नया उमंग भर देनेवाली है। तैंतीस करोड जनता के कल्याण के लिए कवि विराट जनतंत्र का आह्वान करते हैं।

कवि कहते हैं कि सदियों से जो राख बुझी पडी थी वह सुलग रही है। देश की मिट्टी सोने का ताज पहनकर गर्व कर रही है। समय का रथ आ रहा है और उसे राह दो। उसका जर्जर-नाद सुनो। अब सिंहासन खाली करो, क्योंकि जनता आ रही है।

दो राह, समय के रथ का घर्घर नाथ सुनो
सिंहासन खाली करे कि जनता आती है।

अब तक जनता क्या थी? केवल मिट्टी की मूर्तियाँ थी जिन्हें बोध नहीं था। सबकुछ सहनेवाली थी। जितना भी शोषण करें वे मुँह खोलकर अपना दर्द नहीं कहती थी।

जनता सचमुच बड़ी वेदना सहती है। लेकिन उसकी शक्ति अपार है। जनता ही सबकुछ है। पर वे धोखा खा रही है। अब जनता की शक्ति की पहचान बनकर जनतंत्र का जन्म हुआ है। जनता को बन्धन में रखने का समय हो चुका है। जनता जग चुकी

है। अब राह दो, अब भूडोल और बवंडर उठ रहे हैं। जनता कोपाकुल है। उनकी भृकुटि चढी है। सिंहासन ख्राली करो, जनता आ रही है।

लेकिन, होता भूडौल, बबंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुठि चढाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाथ सुनो
सिंहासन ख्राली करो कि जनता आती है।

जनता के हुंकारों से बड़े-बड़े महलों की नीव उख्रड जाती है। उनके साँसों के बल से सत्ता का ताज हवा में उडता है। जनता को रोकने के लिए अब समय के पास शक्ति कहाँ रही है।

जनता की रोकें राह, समय में ताव कहाँ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुडता है।

अब तक जो राजनैतिक अंधकार फैला था वह बीत गया। जनता की शक्ति के कारण यह साध्य हुआ। जनता का स्वप्न अजय है। वह तमस के छाती को चीरकर आता है।

सबसे बड़ा जनतंत्र आ पहुँचा है भारत में। जनतंत्र व्यवस्था में, जनता राजा है। शासक जनता के सेवक हैं। तैंतीस करोड लोगों के हित का सिंहासन अब तैयार करो। अब तक राजा का अभिषेक चलता था। अब उसके स्थान पर प्रजा का अभिषेक होगा। अब मुकुट जनतंत्र का है। वह एक राजा के सिर पर नहीं, बल्कि तैंतीस करोड़ जनता के सिर पर धारण कराया जाएगा।

अभिषेक आज राज का नहीं, प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

अब जनता, तू मूर्ख, आरती लेकर किसे ढूढ रही है। मंदिरों, राजप्रसादों और तहख्रानों में देवता नहीं रहे हैं, देवता सड़कों पर मिट्टी तोड रहे हैं। वे अब ख्रेतों और ख्रलिहानों में मिलेंगे तुझे।

अब जनतंत्र आ गया है। राजदण्ड बदल गया है। फावडे और हल राजदण्ड का स्थान अलंकृत करेंगे। अब श्रृंगार धूल से सजायी जाएगी।

फावडे और हल राजदंड बनने को हैं
धूसरता सोने से श्रृंगार सजाती है;

राह दो समय का रथ आ रहा है। सिंहासन ख्राली करो। जनता आ रही है।

इस कविता में कवि राजनैतिक परिवर्तन को काव्य संवेदना में बाँधा है। जनतंत्र के आगमन की घटना को महान बताया गया है। जनतंत्र की शक्ति को पहचानने का

आह्वान करते हैं। समय के साथ सत्ता में परिवर्तन की आवश्यकता पर कवि ज़ोर देते हैं। जनतंत्र को जनता की संवेदना में समावेशित करने का प्रयास कविता का केन्द्रीय उद्देश्य बना है। 'सिंहासन ख़ाली करो' यह आह्वान क्रांतिकारी चिंतन का परिणाम है। हुंकार और अंगार से भरी यह कविता जनता की चेतना को जगाती है और जन सत्ता की ओर लोगों को जागरूक करती है।

दिनकर जी का काव्य शिल्प अनोखा है। जागरण की भाषा में लोक-चेतना को इस कविता में उकसाया गया है। अनेकों संकेतों में कविता क्रांतिकारी बनी है। विषय को शिल्प के द्वारा सफल निकाला गया है।

कालगी बाजरे की

अज्ञेय

'अज्ञेय' का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन है। उनका जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ। मैट्रिक तक की शिक्षा घर पर ही हुई। वे विज्ञान के विद्यार्थी थे। बी. एस. सी को बाद वे क्रांतिकारी संगठन में शामिल हो गए। यायावरी उनका स्वभाव था। देश-विदेश में वे ख़ूब घूमे। वे 'तारसप्तक' के संपादक थे। प्रयोगवादी कविता के वे प्रणेता थे। नयी कविता में भी वे शरीक हुए। व्यापक मानवीयता उनकी कविताओं की विशेषता है। अज्ञेय ने लगभग साहित्य की सभी विधाओं पर रचना की है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- छोडा हुआ रास्ता, लौटती पगडंडियाँ (कहानियाँ) शेखर एक जीवनी (उपन्यास) नदी के द्वीप (उपन्यास) अपने अपने अजनबी (उपन्यास) अरे यायावार रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली (यात्रा वृत्तांत), त्रिशंकु, आत्मनेपद (आलोचना) आदि।

कलगी बाजरे की, अज्ञेय की बहुचर्चित कविता है। इसमें आधुनिकता बोध रहता है। कवि का मानना है कि पुराने उपमान मैले हो गए हैं। अब नए उपमान की तलाश की जाती है। चाहे शब्द पुराने क्यों न हो, लेकिन उसमें अप्रस्तुत अर्थ नया है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए कवि कलगी बाजरे का उदाहरण लिया है।

'प्रयोगवादी' कविता आन्दोलन के प्रारंभ में नए उपमानों के प्रति आग्रह ज़ोरों पर चलता था। इस आग्रह को व्यक्त करनेवाली कविता है यह। कवि कहते हैं कि पुराने उपमानों का उपयोग निरंतर करने के कारण वे घिस गए हैं। अर्थात् पुराने उपमानों का सौन्दर्य नष्ट हो गया है। अब नए उपमान याने अप्रस्तुत योजना की आवश्यकता है। इस कविता में अपनी प्रेयसी को सम्बोन्धित करके कवि कहते है कि:

अगर मैं तुम को
ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुँई
टटकी कली चम्प की
वगैरह, तो .....

आगे कवि का कहना है - मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि मेरा हृदय मैला है। लेकिन बात यह है कि ये उपमान जो मैं तुम्हारे लिए उपयोग करता हूँ, वे मैले हो गए हैं।

कवि नए उपमान लेने के लिए उत्साही है। कवि ने अपनी प्रेयसी की तुलना बाजरे को दोलती कलगी से की है और बिना संकोच से घास तक से की हैं-

बिछली घास हो तुम
या शरद के साँझ के सूने गगन की पीठिका पर
दोलती कलगी अकेली
बाजरे की।

कवि अपनी कविता में नयी अर्थवत्ता लाना चाहते हैं। इसलिए नए उपमानों की तलाश करते हैं-

'ये उपमान मैले हो गए हैं'
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच

उपमानों में नएपन की माँग कवि करते है, क्योंकि नए उपमानों की माँग नए सौन्दर्य की मांग है।

यह कविता प्रयोगवादी काव्य आन्दोलन का वादा 'नवीनता की तलाश', को पुष्ट करती है। शब्द पुराने क्यों न हो, लेकिन अर्थ उसमें नया भर दो, यही कविता का आह्वान है।

'कलगी बाजरे की' के द्वारा कवि अपने काव्य-शिल्प संबंधी दृष्टिकोण को व्यक्त कर रहे हैं। कविता नए काव्य शिल्प को लेकर लिखी गयी है।

साँप

अज्ञेय

इस कविता में कवि नगरीय जीवन की विडंबना को व्यक्त करते हैं। 'साँप' इसमें प्रतीक है। साँप काटता है। साँप के पास विष है। साँप गाँव में रहता है। वह कभी शहर में नहीं रहता है। गाँव में रहकर भी वह निष्कलंक नहीं है। उसमें कलंक है। 'विष' शब्द कलंक की ओर इशारा करता है। इसलिए कवि पूछते है:

तुम सभ्य तो हुए नहीं नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया।

नगरवासी, साँप के समान है। उसने डसना सीखा है। लेकिन, साँप नगरवासी न होते हुए भी उसने डसना कहाँ से सीखा है। कहने का मतलब है कि गाँव की निष्कलंकता से नगर बहुत दूर है। नगर के लोगों में निष्कलंकता नहीं है।

'साँप' की प्रतीक में कविता का शिल्प बना है। विषयवस्तु प्रतीक में समृद्ध हुई है।

लकडी का रावण

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

गजानन माधव मुक्तिबोध मराठी ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए। उनकी शिक्षा उजैन में हुई। पढ़ाई के बाद स्कूल में अध्यापक बने। हंस, शारदा जैसी पत्रिकाओं के संपादन से सम्बद्ध रहे। वे मार्क्सवादी थे। वे तारसप्तक के कवि थे। जीवित रहते समय उनकी कृतियों में एक ही कृति प्रकाशित हुई थी। शेष सब मृत्यु के बाद प्रकाशित हुईं। उनको कवि के रूप में और आलोचक के रूप में ख्याति मिली है। वे गहरे आत्मसंघर्ष के कवि थे। कविता में 'फैन्टसी' का प्रयोग उनकी विशेषता है। समाज में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं का उन्होने बड़ी गहराई से आंका और उसकी अनोखी अभिव्यक्ति दी।

मुक्तिबोध की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- 'चाँद का मुँह टेठा है', 'एक साहित्यिक की डायरी', नए साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध।

'लकडी का रावण' शीर्षक कविता में वर्ग संघर्ष को नए मायने में चित्रित किया गया है। सत्ताधारी लोग हमेशा इस डर के साथ रहते हैं कि जनता की क्रांति कभी भी घटित हो सकती है। वास्तव में वे हर क्षण भयभीत हैं। लकडी का रावण यहाँ प्रतीक बनकर आया। सत्ता का प्रतीक है यह।

इस कविता का आधार उत्तरभारत का प्रसिद्ध त्योहार 'रामलीला' है। रामलीला में रावण का बड़ा व लंबा पुतला जलाया जाता है। पुतला जलते-जलते अंत में वह इस

स्थिति में आ पहुँचता है कि अब गिरा तब गिरा। इसी प्रकार सत्ता भी इसी भय में रहता है कि उसका अधिकार भी अब ख़तरे में है। अर्थात् वह अब गिरा या तब गिरा की अवस्था में है।

इस कविता में कवि जनशक्ति की विजय और सत्ता की पराजय को बिम्बात्मक प्रतीकों में प्रस्तुत किया है। कविता में कई बिंब हैं- पहाड़, पहाड़ का उत्तुंग शिख़र, उसके नीचे कुहरा, कुहरे के अन्दर हलचल आदि। फिर सत्ता की डर जाने की स्थिति और यह संदेह किया जाना कि क्या जनता की ओर से क्रांति हो रही है। काले पत्थर, काले मनुष्य आदि का चित्रण सर्वहारा का सत्ता के प्रति विद्रोह किए जाने को सूचित करते हैं। अंत में सब ओर से सत्ता जनता की शक्ति से घिर जाती है। अब सत्ता गिर जाएगी। इस स्थिति को काव्य संवेदना में कवि ने बाँधा है।

कवि कहते हैं कि वे त्रिकोण पर्वत शिख़ार से नीचे देख रहे हैं। उसके नीचे कुहरे पड़े हैं। कुहरे-के ऊपर एक उत्तुंग शिख़र दिख़ाई पडता है। यहाँ पर्वत शिख़र और नीचे का कुहरा उस व्यवस्था की ओर संकेत कर रहे है जो शोषक और शोषित है। सत्ता और पीडित जनता, वर्ग विभाजित बरकरार व्यवस्था का चरित्र है। सत्ता की स्थिति को इसी प्रकार व्यक्त किया गया है-

...उस कुहरे से बहुत दूर
ऊपर उठ ...
पर्वतीय ऊर्ध्वमुख़ी नोक एक
मुक्त और समुत्तुंग

सत्ता को लग रहा है कि वह सर्वशक्तिमान है। उसके अनाकार कंधों पर नीला आकाश विराजमान है। यह शक्ति ऊपर से देख रही है कि सीमाहीन कंबल-सा कुहरा दूर तक सब कहीं फैला है। कंबल के भीतर कुछ हिल-मुड रही है। पहले ऐसा लगा है कि कंबल के अंदर जो असंयत स्थिति या हलचल है वह केवल भ्रम है। लेकिन बाद में यह पता चला कि यह भ्रम नहीं है बल्कि भयानक भीड है। भीड वानर और नर की है। भीड लंगूर की भी है। अब भीड इस शिख़र तक पहुँची है। पहले भीड बहुत दूर थी। अब इसका फासला कम हो गया। मतलब जनशक्ति आगे बढ़ रही है। सत्ता अब डरने लगी। वह जनशक्ति का संहार करना चाहती है-

मेरी इन भुजाओं में बन जाओ
ब्रह्मशक्ति!
ताराओं
दूर पडो वरसो

.....

प्रहार करो उनपर,

कर डालो संहार

जन शक्ति सत्ता के नभचुंबी शिखरों तक घेरकर पहुँच गयी है। सत्ता जनशक्ति से घिरी हुई है और अकेली पड़ गयी है। वह बाँस और कागज़ से बना विशालकाय रावण का पुट्ठा जैसा लग रहा है। उत्तर भारत में रामलीला के अवसर पर रावण का महाकाय पुतला बनाया जाता है और उसे जलाया जाता है। कवि ने इसे प्रतीक के रूप में लिया है।

जनशक्ति ने सत्ता को घेर लिया है और सत्ता पर आक्रमण शुरू किया है जैसे रावण के पुतले पर आग लगाया जाता है।

हाय, हाय

उग्रतर हो रहा चेहरों का समुदाय

और कि भाग नहीं पाता मैं

हिल नहीं पाता हूँ।

अब स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी कि बेबस सत्ता जडवत् खडी है। स्थिति ऐसी भी बन गयी है कि सत्ता अब गिरी या तब गिरी या इसी पल कि उसी पल।

ऐसा, जनशक्ति की विजय सुनिश्चित हुई है।

यह कविता, 'रामलीला' के त्योहार की कथा को लेकर जनक्रांति की सृजनात्मक अभिव्यक्ति दी है। कवि ने इस कविता के कथ्य को रामलीला के त्योहार की कथा के द्वारा प्रस्तुत किया है। यह कविता वास्तव में जनक्रांति का अनोखा बिम्ब प्रस्तुत करती है। पर्वत शिखर, कोहरा, मैं और शून्य, वानर, मनुष्य, लंगूर आदि सांकेतिक शब्द हैं जिनके द्वारा सत्ता और सर्वहारा के बीच के वर्ग संघर्ष को सृजनात्मक अभिव्यक्ति साध्य हुई है। सत्ता का खोखला स्वत्व रावण के पुतले के द्वारा संकेतित किया गया है।

मुक्तिबोध का काव्य शिल्प सरल नहीं है। जटिल व सांकेतिक बिम्बों में भरा पड़ा है। काव्य का कथ्य पेचीदा है, अतः शिल्प भी सरल नहीं है। मुक्तिबोध वास्तव में असाधारण बात प्रस्तुत कर रहे है। अतः शिल्प भी असाधारण बना है।

भेडिया

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

'श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना' हिन्दी के जाने माने कवि हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में वे 'नयी कविता' के दौर के कवि है। वे उत्तर प्रदेश राज्य से है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने अध्यापन का काम और आकाशवाणी के प्रोड्यूसर का

काम किया। वे तीसरे सप्तक के कवि भी थे। 'खूँटियों पर टँगे लोग' कविता संकलन पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने साहित्य के अधिकांश विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है। उनकी काव्य कृतियाँ ये हैं: काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूना नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूँटियों पर टँगे लोग आदि। उपन्यासों में सूने चौखटे और पागल कुत्तों का मसीहा प्रमुख है। कहानी संग्रहों में कच्ची सडक, अंधेरे पर अंधेरा आदि आते हैं। इनके द्वारा लिखे गए नाटक हैं- बकरी, लडाई आदि।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना गहरी वैयक्तिक पीडा को अभिव्यक्त करनेवाले कवि हैं। उनकी कविताओं में व्यक्त पीडा व्यक्तिगत होने के साथ-साथ सामाजिक विषमताओं से उत्पन्न पीडा भी है। वे सामाजिक यथार्थ के प्रति भी जागरूक कवि थे। उनकी दृष्टि मनुष्य के समस्त जीवन क्षेत्रों की विसंगतियों और विकृतियों पर पडी है। उनकी कविताओं में आदमियों के प्रति गहरी आस्था दृष्टव्य है।

भेडिया-I

कवि कहते हैं कि भेडिए की आँखें सुर्ख है याने लाल रंग की हैं। जब भेडिया आता है तब उसे उस तरह खूर कर देखो जब तक तुम्हारी आँखें सुर्ख न हो जाए। भेडिये की आँखें सुर्ख है और तुम्हारी आँखें सुर्ख नहीं है। लेकिन सुर्ख होने के खतरे से तुम्हारी आँखें बाहर नहीं है। यहाँ भेडिया शोषक का प्रतीक है, 'तुम' शोषित का। भेडिये की आँखें सुर्ख माने शोषक का हमला शोषितों पर सुनिश्चित है।

जब भेडिए तुम्हारे सामने हो तब 'तुम' क्या कर सकते हो? अर्थात शोषक के सामने 'तुम' निस्सहाय हो। तुम इतना कर सकते हो कि अपना मुँह छिपाकर भाग सकते हो। ऐसा करने पर भी वह भेडिया जाएगा नहीं। या तो भेडिया तुम्हें समाप्त करेगा या भेडिया तुम्हारे भीतर प्रवेश करेगा। अर्थात् शोषक एक बार आया तो फिर जाएगा नहीं। या तो तुम समाप्त हो जाओगे या शोषक के साथ तुम्हारा अस्तित्व समझौता करेगा।

अंत में कवि पूछते हैं कि भेडिए की आँखें तो सुर्ख है और तुम्हारी आँखें? अर्थात् तुम्हारा प्रतिरोध तभी संभव हो जब तुम्हारी आँखें भी लाल हो जाती है। लाल रंग पर लाल रंग से ही हमला संभव है। शोषक का लाल रंग शोषण को सूचित करता है तो शोषितों का लाल रंग प्रतिरोध याने क्रांति का रंग है। अर्थात् शोषण की समाप्ति, वर्ग संघर्ष या क्रांति से संभव है।

भेडिया इस कविता में सशक्त प्रतीक है और लाल रंग कविता के थीम को स्पष्ट करता है।

भेडिया-II

कवि कहते हैं- भेडिया गुर्राते हैं। तुम मशाल जलाओगे। मतलब शोषक जब आएगा तब उसका प्रतिरोध किया जाना है। यहाँ दो वर्गों के चरित्र दिखाए गए हैं- एक है शोषक वर्ग और दूसरा है सर्वहारा वर्ग। सर्वहारा वर्ग हमेशा प्रतिरोध करता है और शोषक वर्ग शोषण ज़ारी रखता है। भेडिया मशाल नहीं जला सकता है माने शोषक परिवर्तन के विरुद्ध है। परिवर्तन सर्वहारा के द्वारा क्रांति से साध्य है।

मशाल को देखकर भेडिया डरता है। मतलब क्रांति से शोषक भयभीत होता है। वह भाग जाएगा। शोषकों को भगाने के लिए क्रांति करनी चाहिए। क्रांति ही एकमात्र रास्ता है।

भेडियों को जंगल के बाहर कर दो और वर्फ़ में छोड़ दो। मतलब शोषकों को समाप्त कर दो। भेडिया भूखे नहीं रह सकते हैं। वे आपस में लड़कर समाप्त हो जाएँगे। शोषकों के बीच फ़ूट पैदा करना क्रांति की विजय है। शोषकों के समाप्त होने के बाद 'तुम' ही रहोगे। 'तुम' कभी नहीं मरोगे जब तक तुम शोषक न बनते। कहने का तात्पर्य है कि शोषितों को क्रांति के बाद शोषक नहीं बनना चाहिए।

भेडिया-III

कवि कहते हैं कि भेडिया, भगाने के बाद भी आएगा। शोषितों में से शोषक पैदा हो सकता है। एक बार ऐसा होता है तो फिर उसका वंश बढ़ने लगेगा। कवि का कहना है कि भेडिये का आना इसलिए ज़रूरी है जिससे शोषित खुद अपने को पहचान सकता है कि वह शोषित है नाकि शोषक है। निर्भय रहना एक प्रकार का सुख है, उस सुख के लिए भेडिया को आना चाहिए। भेडिया आएँ तभी मशाल उठा सकते हैं।

शोषितों को मशाल उठाना शीखना चाहिए। क्रांति जो है वह सीखने की बात है। अगर भेडिया याने शोषक नहीं आया तो क्रांति नहीं होगी। क्रांति माने परिवर्तन। परिवर्तन अवश्यंभावी है।

कवि आगे कहते हैं कि भेडिए का इतिहास नया नहीं है। बहुत पुराना है। हर बार भेडिये को उसके माँद से निकाला जाएगा। ऐसा करने केलिए लोग एक जुडकर मशाल लेकर खड़े हो जाते है।

इतिहास, शोषक और शोषितों का है। वह जिन्दा रहेगा भी।

मार्क्सवादी सिद्धांत जो 'द्वंद्वात्मक भौतिक वाद' नाम से जाना जाता है वह इस कविता के थीम के साथ तालमेल बिठाता है।

संसार में हर एक वस्तु के साथ दो विरुद्ध शक्तियों का प्रभाव है और उनके बीच द्वंद्व माने संघर्ष होता ज़रूर। द्वंद्व के फलस्वरूप एक तीसरी वस्तु उनमें से पैदा होगी। फिर इस तीसरी वस्तु में, विरुद्ध शक्तियों का प्रभाव शुरू होगा। उनके बीच द्वंद्व पैदा होगा। इस कविता के 'थीम' (theme) ने यही दिखाया है कि शोषक (भेडिया) आएगा और शोषित (तुम) मशाल लेकर खडे हो जाएँगे। संघर्ष होगा। भेडिया भगाया जाएगा। बाद में 'तुम' में से भेडिया पैदा होगा। फिर द्वंद्व होगा।

इस प्रकार कविता द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सार की रचनात्मक अभिव्यक्ति है।

इन तीनों कविताओं के शिल्प साधारण है। लेकिन इसमें उतारे गये विषय में विशेषता है। विषय की अभिव्यक्ति में इस कविता का सीधा साधा शिल्प सक्षम निकला है।

शहर का व्याकरण

धूमिल

'धूमिल' का असली नाम 'सुदामा पांडे' है। ये कवि भी उत्तर प्रदेश के हैं। किसान परिवार में उनका जन्म हुआ है। स्कूली शिक्षा बहुत मुश्किल से गुज़री है, पॉलिटेकनिक किया और इनस्ट्रक्टर बने।

घूमिल नयी कविता के बाद के कवि हैं। आज़ादी के बाद से लेकर आज तक की भारत की राजनीति उनकी कविताओं में कैद मिलती है। माना जाता है कि वे समकालीन कविता के पहले कवि थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'संसद से सडक तक' और 'कल सुनना मुझे'।

धूमिल की राजनीतिक व सामाजिक प्रतिबद्धता, उनकी कविताओं का प्राण है। आज़ादी के बारे में उनका सवाल विचित्र है- क्या आज़ादी, सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है? आज़ादी से मोहभंगित कवि का सवाल हमारी आँख खुला देनेवाले हैं- हवा से फ़डफडाते हुए हिन्दुस्तान के नक्शे पर गाय ने गोबर कर दिया है।

आज़ादी के बाद के भारत के शहरों की स्थिति कविता में सामान्य तौर पर उतारा गया। एक गाडी जिसपर स्पीकर लगाया गया है वह शहर में गश्तें कर रही है। इसका उद्देश्य शहर का व्याकरण ठीक करना है। एक आदमी चुनाव का पोस्टर लेकर सड़क पर आ गया है। शाम के सात बजे का समय है। जनतंत्र देश का एक विदूषक जूते के शो केस के सामने खडा है। जिसने उतारा है अपना वह चेहरा जो कहता था कि 'मैं प्रभु हूँ'। जनतंत्र देश में जनता प्रभु है शासक सेवक हैं। एक भिक्षुक विदेशी पर्यटक का पीछा कर रहा है। उसके जुबान पर जंगल-गीत का प्यारा छन्द है। यहाँ आगे का सडक बंद है। सैनिक वहाँ तैनात है। शहर में हर चीज़ का नाम महंगाई है। शहर में भीड भी है।

कवि कहते है कि तुमने अपने कुत्ते को क्यों दिन में खोल दिया है। वह पकड लिया जाएगा। अगर तुम उसे बचाना चाहते हो तो उसके गले में एक पट्टा डाल दो। कहने का मतलब है कि शहर के व्याकरण में पट्टा एक पहचान है। सचमुच पट्टा बन्धन को सूचित करती है। पालतू जानवर पट्टे से या रस्सी से बान्धा जाता है। जीने के लिए पालतू जानवर जैसा हो जाना ज़रूरी है।

भारत में आज़ादी वास्तव में किसको मिली, यह सवाल कवि खड़ा करते हैं। पालतू जानवर जैसा बन जाना आज़ादी नहीं है। यह शहर जिसका जिक्र यहाँ किया गया है वह उस स्थिति की ओर इशारा करता है कि इस शहर में जीने के लिए मनुष्य को पालतू बनना पड़ता है। शहर के विभिन्न दृश्य दिखाकर कवि देश की उस स्थिति की ओर इशारा करते हैं जिसका व्याकरण ठीक नहीं है। देश का मतलब शहर की भीड कभी भी नहीं है। जब हर व्यक्ति अपने को आज़ाद महसूस करें तभी देश का व्याकरण ठीक होगा।

नयी कविता की शिल्पगत विशेषताएँ कविता में आयी हैं। नयी भाषा, नया संकेत, नए प्रतीक और नये बिम्ब इसमें दृष्टव्य है।

ग्रहण

अरुण कमल

अरुण कमल बिहार राज्य से हैं। वे पटना विश्वविद्यालय के छात्र रहे है। वे प्रगतिशील कविता के चर्चित कवि हैं। उनकी कविताएँ, जीवन और उसकी विसंगतियों को लेकर लिखी गयी हैं। ये कविताएँ भाषा और शिल्प के स्तर पर साहसी है, साथ ही प्रयोगधर्मी है। कविता में अनेक बिम्ब बनाए गए है। वे भरत भूषण अग्रवाल पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हैं। उनकी कृतियाँ हैं- 'अपनी केवल धार', 'सबूत' और 'नए इलाके में' आदि।

अरुण कमल नयी संवेदना के कवि है। अचानक आए परिवर्तन को 'ग्रहण' के द्वारा यहाँ व्यक्त किया गया है। 'ग्रहण' सामान्य स्थिति में अचानक आनेवाले परिवर्तन को सूचित करता है।

कवि कहते हैं कि तीन बजकर बारह मिनट पर धूप गिरती है और तबसे तीन तैंतीस मिनट तक वह टिकती है। तब तक यहाँ धूप अक्सर रहता है। फिर खिडकी बन्द की जाती है। कवि आगे कहते हैं कि आज अचानक धूप रुक गयी। अचानक एक छाया फैल गयी। कवि ने यह देखा है कि दूर ऊपर नयी बिल्डिंग की बाल्कणी पर कोई कोहनी टेके धूप में खड़ा है। कडी धूप है इसलिए वे नहीं देख पा रहे हैं कि वह कौन है। कवि उसको पहचान भी नहीं पा रहे हैं कि वह कौन है जो ग्रहण के समान आया है। वह राहु कौन है, ठीक तीन बारह बजे पर ही आया है।

यह कविता ग्रहण को प्रतीक बनाकर लिखा गया है। स्वाभाविक गति में जो बाधा आयी है उसे वास्तव में ग्रहण के द्वारा सांकेतित है। इस प्रतीक को किसी भी घटना जो ग्रहण के समान आया है उसके साथ जोड़कर पढ़ सकते हैं।

इस कविता के शिल्प में संकेतों का उपयोग किया गया है। कविता की भाषा, प्रतीक, बिम्ब आदि इशारेदार हैं।

पहाड पर लालटेन

मंगलेश डबराल

मंगलेश डबराल का जन्म १६ मई १९४८ में हुआ। समकालीन कविता के विशिष्ट हस्ताक्षर मंगलेश डबराल ग्रामीण संवेदना एवं कस्बाई जीवन बोध के कवि हैं। महानगर में रहते हुए भी पहाड़ की कठिन ज़िन्दगी से जुड़े मंगलेश का काव्य अपने परिवेश की समग्र पहचान का काव्य है। इसमें प्रकृति एवं मनुष्य की परस्परता में रची-बसी लोक संस्कृति की स्मृतियों के साथ जीवन के प्रति संसक्ति एवं व्यवस्था के प्रति प्रतिरोध की चेतना है। यह प्रतिरोध प्रखर और आक्रामक नहीं है। मितकथन, शान्त लयात्मकता में प्रतिरोध का स्वर प्रकट किया जाता है। क्रूर जमाना एवं अमानवीय व्यवस्था के प्रति कवि का मूल्यपरक हस्तक्षेप है उनकी कविताएँ।

बीस साल की अवधि में मंगलेश के केवल चार काव्य संग्रह प्रकाशित हुए- 'पहाड़ पर लालटेन' (१९८१), 'घर का रास्ता' (१९८८), 'हम जो देखते हैं' (१९९५), 'आवाज़ भी एक जगह है' (२०००) अत्यन्त समृध्द काव्य संवेदना एवं जीवन बोध से संपन्न मंगलेश ने अपेक्षाकृत कम लिखकर भी समकालीन कविता में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है।

यह कविता वन, आदिवासी आदि के जीवन को आधार बनाकर लिखी गयी है। इस में लालटेन क्रांति का प्रतीक है। पारिस्थितिक समस्याएँ, धरती का अधिग्रहण, जंगल का विनाश आदि इसमें उठाए गए मुद्दे हैं।

कवि कहते है कि जंगल में औरत, बच्चे बूढ़े सुरक्षित नहीं हैं। जंगल के लोगों का जीवनाधार जंगल है जिसकी तबाही हो रही हैं। जंगल काटा जा रहा है।

जंगल की चट्टानें जिन्हें कहने के लिए बहुत कुछ है। लेकिन उन्हें कौन सुनता है। रातों रात जंगल नंगे होते जाते हैं।

इस धरती को अब तक पूर्वजों ने सुरक्षित रखा था। लेकिन अब यह तोडी जा रही है।

लेकिन कवि आशावादी है। वे कहते हैं- दूर पहाड़ पर एक लालटेन जलती है। वह आग बनती जाएगी। लालटेन यहाँ प्रतिरोध और क्रांति का प्रतीक है। तब जनशक्ति का उभार होगा। कवि इसे ऐसा व्यक्त कर रहे है:

जंगल से लगातार एक दहाड आ रही है
और इच्छाएँ दाँत पैने कर रही हैं
पत्थरों पर

परिवर्तन के लिए तैयारी हो रही है। अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयारी चल रही है। इसके लिए सारी शक्ति धरती से ही उभर कर आ जाएगी।

कवि ने पारिस्थितिक मुद्दे को नयी संवेदना में पकडा है और उसको सही अभिव्यक्ति देने के लिए कोशिश की है।

समकालीन कविता का शिल्प अलग है जो कविता में उठाए गए मुद्दे को आवाज़ देने की शक्ति रहती है।

आम का पेड़

रामदरश मिश्र

मिश्रजी का जन्म १५ अगस्त, १९२४ को गोरखपुर जिले के डुमरी गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। १९४२ में 'साहित्य रत्न' की उपाधि प्राप्त हुई। १९४६ में बनारस के हिन्दू विश्वविद्यालय में इन्टरमीडियट में प्रवेश लिया और वहाँ से एम.ए और पी. एच. डी. की उपाधी भी प्राप्त कर ली। फिर बड़ौदा अहमदाबाद व दिल्ली के कॉलेजों से प्राध्यापक बने।

१९५१ में उनका पहला काव्य-संग्रह 'पथ के गीत' प्रकाशित हुआ। १९६२ में प्रकाशित 'बैरंग बेनाम चिट्टियाँ' की कविताएँ मार्क्सवादी अन्तर्दृष्टि से युक्त हैं। १९७६ में 'कन्धे पर सूरज', १९८४ में 'दिन एक नदी बन गया', १९८९ में 'जुलूस कहाँ जा रहा है', १९९२ में 'आग कुछ नहीं बोलती', १९९६ में 'बारिश में भीगते बच्चे' तथा १९९९ में 'ऐसे में जब कभी' प्रकाशित हुए। मिश्रजी प्रतिष्ठित उपन्यासकार भी हैं। 'जल टूटता हुआ', 'आदिम राग', 'अपने लोग', 'पानी के प्राचीर' आदि।

प्रकृति प्रेमी कवि का दर्द कविता का रूप धारण कर लेता है। कविता का विषय यह है कि कवि के मित्र के यहाँ जो आम का पेड था वह काटा गया। उसका कारण मित्र कह रहा है। धार्मिक पूजा-पाठ आदि के लिए आम के पत्तों का उपयोग किया जाता है। मित्र के यहाँ जो आम का पेड था उसके पत्ते मांगने पडोसी लोग आते हैं। मित्र बीमारी के कारण घर में आराम ले रहे थे। लेकिन निरंतर लोग आ रहे थे और पत्तों की मांग कर रहे थे। इसने मित्र को तंग किया है। कवि कहते हैं:-

लेकिन मांगने आनेवाले लोग
मेरी निजता में जो उत्पात पैदा कर जाते है
उसे तो घंटों झेलना ही पडता है
विश्राम की जो हल्की-सी लय

बनी होती है
वह टूटकर तडपती रहती है।

लोगों के धार्मिक कर्मकांडों के उत्पाद मित्र के सौन्दर्य बोध का हत्यारा बना। पेड़ काटा गया। अंत में कवि कहते हैं:

मैं उदास-सा कटे पेड को देखता रहा
फिर घर लौट आया
एक सौन्दर्य-बोध की हत्या का
दर्द उठाते हुए।

पारिस्थिति विमर्श को काव्य संवेदना में कविता ने पकडा है। पारिस्थितिकी की रक्षा में हमारा सौन्दर्य बोध भी कार्य करता है। उसकी हत्या, धर्म करती है। यहाँ धर्म वास्तव में पारिस्थितिकी पर उत्पाद करता है। कविता में उठाया गया मुद्दा अहं है। इसमें उठायी गयी संवेदना पारिस्थितिक विमर्श बन जाती है।

पारिस्थितिक समस्याओं के संप्रेषण में इस कविता के शिल्प की सरलता ध्यानाकर्षक है। आडंबरहीनता इसका एक बड़ा गुण है।

पन्द्रह अगस्त

गिरिजाकुमार माथुर

गिरिजाकुमार माथुर नयी कविता के प्रमुख कवियों में आनेवाला कवि है। वे मध्यप्रदेश के अशोक नगर से आए है। वे आकाशवाणी में उन्नत पदों पर रहे हैं। उनकी काव्ययात्रा छायावाद से शुरू हुई और प्रगतिवाद और प्रयोगवाद से गुज़रकर नई कविता से जुडी। वे तारसप्तक के कवि थे। उनकी काव्य कृतियाँ हैं- 'धूप के धान', 'नाश और निर्माण', 'शिल्पपंख चमकीले जो बाँध नहीं सका', 'भीतरी नदी की यात्रा'।

प्रेम और प्रकृति उनके काव्यों में आदि से अंत तक रहे। विषय की दृष्टि से उनके काव्य वैविध से भरा है। राष्ट्रीयता और मानववादी स्वर भी इनकी कविता की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं।

उनकी काव्य दृष्टि संपूर्ण उत्पीडन पर केन्द्रित है। उनकी संवेदनशील दृष्टि मानवीय जीवन की अभाव की स्थितियों के सच्चे चित्र अंकित करती है।

'पन्द्रह अगस्त' शीर्षक कविता आज़ादी की खुशियों की ओर संकेत करती है, साथ ही साथ आज़ादी के प्रति सतर्क रहने का आह्वान भी करती है।

कवि कहते हैं कि पन्द्रह अगस्त के रात जीत की रात है। अतः सैनिक! तुम सावधान रहे। देश के द्वार खुल गए। लेकिन आज़ादी पूरी नहीं मिली हैं, क्योंकि दुख के बीते दिन अब भी मिटे नहीं है। अब भी हमें सतर्क रहना है:

आज पुराने सिंहासन की

टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफ़ान, इंदु तुम
दीप्तिमान रहना।

कवि कहते हैं कि पहरेदार तुम सतर्क रहें, क्योंकि हमारी मशालें ऊँची उठी है और आगे का रास्ता कठिन है। शत्रु हट गया है, लेकिन उनकी छाया अब भी रहती है। कठिन शोषण जो आज तक हुआ है जिससे हमारा घर कमजोर है। लेकिन हमारे लिए नयी ज़िन्दगी आ रही है। हमारा विश्वास अमर है।

यह कविता आज़ादी की उमंग को स्वीकारती हैं, साथ ही साथ जो आज़ादी की उमंग को स्वीकारती हैं, साथ ही साथ जो आज़ादी मिली है, उसके प्रति जागरूक रहने का आह्वान भी करती है। कविता का केन्द्रीय स्वर इन पंक्तियों में बुलंद है:

शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज
कमज़ोर हमारा घर

आज़ादी और उसकी गति को काव्य संवेदना में बाँटने में कवि सफ़ल हुए हैं।

इस कविता का शिल्प साधारण है, लेकिन उसमें उठाया गया विषय असाधारण है। असाधारण विषय को कविता के शिल्प ने आकर्षक बनाया है।

ढेपचा के बाबू

निर्मला पुतुल

समकालीन आदिवासी लेखिकाओं में निर्मला पुतुल का स्थान महत्वपूर्ण है। उनका जन्म झारखंड के 'दुधानी कुरुवा' नामक गाँव में ०६ मार्च १९७२ में हुआ। संथाली, बंगला, अंग्रेज़ी, भोजपुरी, अंग्गीका, नागापुरी आदि भाषाओं का ज्ञान भी है। विगत १५ वर्षों से निर्मला पुतुल शिक्षा, सामाजिक विकास, मानवाधिकार और आदिवासी महिलाओं के समग्र उत्थान के लिए व्यक्तिगत, सामूहिक एवं संस्थागत स्तर पर सतत सक्रिय है। ग्रामीण, पिछड़ी, दलित, आदिवासी महिलाओं के बीच शिक्षा एवं जागरूकता के लिए विशेष प्रयास करती रहती है।

अब तक दो कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। जिसमें 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' नामक काव्य संकलन भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित है। और 'अपने घर की तलाश में' रमणिका फाउण्डेशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित है।

'ढेपचा के बाबू' शीर्षक कविता आदिवासी जीवन को आधार बनाकर लिखी गयी है। 'झारखण्ड' के पिछडे इलाके में कवयित्री रहती है। सभी ओर से अंधाधुंध शोषण

आदिवासियों का होता है। ख़ासकर स्त्रियों का शोषण निर्बाध गति से होता है। आदिवासी जीवन की स्थिति और गति इस कविता में सघन है।

कवयित्री कहती है कि 'ढेपचा के बाबू' काश्मीर चले गए है पैसा कमाने के लिए। ढेपचा भी चला गया इसी के लिए 'असम'। अन्य लोग जैसे मुँगली और बुधनी, बंगाल गयी हैं। नौकरी के बहाने इन्हें ले जाते हैं, लेकिन उनका सभी प्रकार का शोषण होता है।

कवयित्री घर में अकेली है। अकेलापन का कष्ट वह स्वयं उठा रही है। अकेलापन की अवस्था बेहद दुखदायक है। साथ ही साथ घर की संपत्ति का नष्ट भी होता है। एक बार पिछवाडे का कट्हल रात में कोई ले गया। आसपास के लोगों के बीच अंधविश्वास चलता है। एक बार लखना के बेटे को साँप ने काटा तो लोग कहने लगे कि कवयित्री डायन है। उसने कुछ कर दिया है बच्चे को। पंचायत की ओर से ज़रूर सताया गया होता अगर सांप का, बच्चे को काटना किसी ने देखा हो।

सभी ओर से कवयित्री का शोषण होता है। व्यापारी जो आते है वे कम दाम में आदिवासियों से चीज़ें ख़रीदकर लूटते हैं। उनकी ज़मीन कम दाम में हडप लेती है। सरकार की ओर से मिलनेवाली सहायता भी ठीक नहीं मिलती। बी. पी. एल कार्ड बना है, लेकिन धान उनको नहीं मिलता, दूसरे लोग हड़प लेते हैं। इंदिरा-आवास योजना के तहद घर बनाकर मिलने के लिए कवयित्री भागदौड करती है, लेकिन राजनीतिक, नौकरशाही, ब्लोक के अफ़सरों को ख़ुश करना पडता है। पानी, खेती, स्कूल भी सुविधा आदि सब आदिवासियों के लिए मुश्किल की वस्तु है।

इतने सब होने के बावजूद कवयित्री ने अपनी ज़मीन बेची नहीं। ज़मीन तोड़ा नहीं। परंपरागत जीवन-शैली को बरकरार रखा गया है।

इस कविता में आदिवासी इलाके के जीवन को काव्य-संवेदना में पकडा गया है। अब तक लिखी गयी कविता में आदिवासी स्त्री के जीवन का लेखा-जोखा अप्रत्यक्ष था जिसे कवयित्री ने इसमें प्रस्तुत किया है। हाशिए पर रखे गए लोगों के जीवन को अपनी रचनात्मकता में बाँधने का ऐतिहासिक कार्य कवयित्री ने जो किया है वह एक बड़ी उपलब्धी ज़रूर है।

इस कविता का शिल्प आदिवासी जीवन को पकडने में सफल निकला है। शिल्प ने विषयगत सीमाओं का परवाह नहीं किया है। शिल्प ने विषय का अनुगमन हू-ब-हु किया है।

नदी और साबुन

ज्ञानेन्द्रपति

समकालीन हिन्दी कविता को नयी दिशा और नूतन दृष्टि देने में सिद्धहस्त कवि है ज्ञानेन्द्रपति। उनका जन्म झारखण्ड़ में हुआ था। उनकी कविताओं में समकालीन अनेक मुद्दे मुखर हुए हैं। उनकी कविताएँ सिर्फ कथनी नहीं है वास्तव में करनी है। वे कविता के लिए प्रतिबद्ध कवि है। 'गंगानट' एवं 'संशयात्मा' उनकी काव्य कृतियाँ हैं। उनकी कविताएँ वास्तव में हमसे कई सवाल करती हैं और उनका जवाब भी खोजती हैं। निराला और मुक्तिबोध की परंपरा में इनको भी हम शामिल कर सकते हैं। 'आँख हाथ बनते हुए' और 'शब्द लिखने के', यह कागज़ बना है ये दोनों उनकी अन्य काव्य संग्रह हैं। एमचक्रनगरी उनका काव्य नाटक है।

नदी और साबुन शीर्षक कविता बड़ी महत्वपूर्ण कविता है। प्रदूषण के मुद्दे को लेकर लिखी गयी यह कविता काफ़ी संवेदनात्मक है और सोचनीय है। विकास के नाम पर शोषकों ने प्रकृति पर आक्रमण किया है और मनुष्य जीवन को दुष्कर बना दिया है। कवि का गंगा नदी से यह पूछना है कि किसने तुम्हारा नीर हरा और कलकल में कलुष भरा। ये अपने समय के बड़े सवाले हैं।

कवि कहते हैं कि नदी तुम्हारी अवस्था बहुत दयनीय है। तुम क्यों इतनी दुबली हो गई है। किसने तुम्हारा नीर हरा और कलकल में कलुष भरा? जानवरों के, कछुओं के और हाथियों के द्वारा कभी तू दूषित नहीं हुई है। इनकी क्रीड़ाओं को तू सहती रही। लेकिन कारखाने के द्वारा उगली गयी मलिन जल से तुम्हारी शुभ्र त्वजा बैंगनी हो गई है। तुम्हारे सिरहाने हथेली भर की एक साबुन की टिकिया ने तुम्हें पराजित किया। तुम युद्ध हार गई।

इस कविता में पारिस्थितिक मुद्दे को काव्यसंवेदना में उतारा गया है। कविता नदी के प्रदूषण की ओर इशारा करती है और हमारी आँखें खुला देती है। नदी पर किए जा रहे मनुष्य के आतंक पर कवि अपने गुस्से उतार रहे हैं। इन्हें हम सुने बिना छोड़ नहीं सकते हैं, क्योंकि कविता के द्वारा उठाया गया मुद्दा काफी पेचीदा है और आँखें खुला देनेवाला है।

कवि ने इस कविता के कथ्य को सरल काव्य शिल्प में पकडा है। इसकी भाषा सहज एवं स्वाभाविक है। बिंबों जैसे जानवरों और 'कछुओं की क्रीडाओं' के हैं, जो इसमें उठाए गए मुद्दे को स्पष्ट करने में सहायक हैं। साबुन की टिकिया सांकेतिक शब्द है जो प्रदूषण की तीक्ष्णता को समझाती है। 'हार गयी युद्ध' में नदी के प्रतिरोध की ओर इशारा मिलती है।

Module - III

प्रवाद पर्व

नरेश मेहता

इस नाट्य-काव्य की रचना सन् १९७७ ई. में हुई है। इसका आधार रामयण की कथा की एक घटना है। रावण के साथ युद्ध के बाद सीता को मुक्त किया गया और सीता की अग्नि परीक्षा भी की गयी थी। लेकिन अयोध्या में एक धोबी की ओर से फिर सीता के पातिव्रत्य पर संदेह उठाया गया। इस पर राम ने निश्चय किया कि सीता के ऊपर जो आरोप लगाया गया गया है उसके मद्देनज़र राज्य के हित में सीता का त्याग किया जाए। राम के आदेश का अनुसरण करके लक्ष्मण ने सीता को जंगल में छोड दिया।

नरेश मेहता ने इस घटना को अपने काव्य के लिए आधार बनाया। इसके द्वारा अपने युग के यथार्थ को व्यक्त करने की कोशिश की गयी है। इसमें तत्कालीन युग की राजनीति पर भी सवाल किया गया है। जब इस काव्य की रचना हुई तब देश आपात्काल से गुज़र रहा था। इस समय किसी को स्वतंत्रतः बोलने की अनुमति नहीं थी।

इस काव्य की कथावस्तु पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है- (१) इतिहास और प्रति इतिहास (२) प्रतिइतिहास और तन्त्र (३) शक्तिः इक सम्बन्ध, एक साक्षात् (४) प्रतिइतिहास और निर्णय (५) निर्वेद विदा।

प्रथम सर्ग की शुरुआत में राम बेचैन होकर राज भवन में टहल रहे हैं। उनका मन प्रश्नाकुल है। वे भविष्य, प्रारब्ध और नियति पर सोच रहे हैं। वे कहते हैं:

क्या यही है मनुष्य का प्रारब्ध?
कि, कर्म
निर्मम कर्म

केवल असंग कर्म करता ही चला जाएँ, कहने का मतलब है कि मनुष्य जीवन का अर्थ केवल कर्म करना ही है। कर्म को राम निर्मम कर्म कहते हैं। मनुष्य केवल निरंतर कर्म करने का साधन ही है, और कुछ नहीं है। साध्य सिर्फ कर्म ही है। कर्म किसके लिए कर रहे हैं? लेकिन यह सवाल अनुतारित है। मनुष्य का मन इस प्रश्न से आकुल है। उसके मन में आग्रह ही रहता है कि इसका उत्तर मिले, पर उसको कहीं से उत्तर नहीं मिलता है। किसी भी दिशा से या किसी भी व्यक्ति से जवाब नहीं प्राप्त होता है।

आगे राम, धोबी के द्वारा सीता के ऊपर किए गए आरोपों पर विचार करते हैं। इस तरह का आरोप जब उठता है तब राजतंत्र और इतिहास पर उसका प्रभाव पड़ता है।

यह आरोप जो सीता के चरित्र पर किया गया है वह केवल आरोप मात्र नहीं है, परन्तु जो इतिहास अब चल रहा है उसका प्रति इतिहास है। यह आरोप इतिहास को बदल सकता है और इसे प्रतिइतिहास में परिवर्तित कर सकता है। लेकिन राम ने प्रति इतिहास को नहीं माना। वे मानते हैं कि यह जनता का अधिकार है। जनता को कभी प्रति इतिहास के लिए दबाया नहीं जाना चाहिए। राम का यह मानना है कि साधारण जन को इतिहासहीन बना देने से ज्यादा अच्छा है- स्वयं इतिहासहीन बन जाना। राम कहते हैं-

जब भी
कोई अज्ञात कुलशील
अनाम साधारणजन
किसी इतिहास पुरुष के विरुद्ध
तर्जनी उठाने का साहस करता है
तब वह मात्र विद्वेष नहीं होता।

इतिहास सदा राजपुरुष को घेरकर बनता है। राम मानते हैं कि साधारण जन के संदेह का समाधान देना राजा का कर्तव्य है। सीता के चरित्र पर जो प्रश्न खडा हुआ है, उसका समाधान राजा राम को देना ही है। यहाँ राम सीता के पति के रूप में नहीं, परन्तु राम राजा के रूप में उत्तरदायी है। राम का कहना है कि इतिहास खड्ग से नहीं लिखा जाना चाहिए बल्कि मानवीय उदात्तताओं से भी लिखा जाना चाहिए। व्यक्ति चाहे राजा हो, महान हो, पर वह मानवीय उदात्तताओं से परे नहीं है:

इतिहास
खड्न से नहीं
मानवीय उदात्तता से लिखा जाना चाहिए।

दूसरा सर्ग, धोबी के द्वारा सीता के चरित्र पर उठाया गया संदेह जो है, उसपर चर्चा करता है। चर्चा राम, लक्ष्मण, भरत और मंत्रियों के बीच होती है। धोबी का सीता के चरित्र के ऊपर तर्जनी उठाना जो है वह लक्ष्मण और भरत दृष्टि में राजद्रोह है। लेकिन राम इसको नहीं मानते हैं। राम कहते हैं कि अगर धोबी के द्वारा ऐसा नहीं कहा गया तो राज्य भय का प्रतीक बन जाता। राम कहते हैं:

गूंगेपन से कहीं श्रेयस् है
वाचालता।
जिस दिन

मनुष्य अभिव्यक्तिहीन हो जाएगा
वह सबसे अधिक।
दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा।

राम इस बात को साबित करने के लिए रावन का उदाहरण देते हैं। रावण ने जनता को नहीं सुना। जनता भय और आतंक से पीडित थी। राम आगे कहते हैं कि मैं साधारण लोगों के द्वारा उठाए गए सवालों को भी महत्व दूँगा। इनकी अवहेलना अगर राम करेंगे तो राम और रावण में क्या अंतर रहेगा।

तीसरा सर्ग- 'एक सम्बन्धः एक साक्षात्' है जिसकी शुरुआत में राम उदासीन तथा उद्विग्न दिखाई पडते है। इसे देखकर सीता उनकी चिंता का कारण जानना चाहती है। यहाँ राम और सीता के बीच वार्तालाप होती है। राम, व्यक्ति और राजनीति, इतिहास और राजनीति आदि से परेशान है। राम यह भी सीता से कहते हैं कि राम रूपी व्यक्ति पर, इतिहास पुरुष राम और प्रशासक राम के बीच का द्वंद्व अपार है। व्यक्ति के रूप में राम का जीवन दुखों से घिरा हुआ था, बार-बार वह संकटों की स्थितियों से गुजरा। एक बार रावण ने सीता को राम से अलग किया तो अब धोबी ने सीता के चरित्र पर तर्जनी उठाकर समस्या खडी की है। लेकिन सीता कहती है कि उसे इस प्रकार की समस्याओं के आने का पूर्वाभास था। जब उसने पहली बार पुष्पवाटिका में राम को देखा तब उसे मालूम हुआ ता कि राम इतिहास पुरुष है। इतिहास पुरुष के साथ उसका जीवन, और कुछ नहीं, सिर्फ उनके पार्श पर केवल प्रतिमा बनकर खडा होना है। राम के साथ अपने वार्तालाप के दौरान सीता काफी तर्क पूर्ण और विचार-प्रधान दिखाई पडती है। वह राम से कहती है कि राज्य, न्याय और राष्ट्र को व्यक्ति से ऊपर मानना चाहिए। राज्य साधारण जन के विश्वास पर खडा होना चाहिए। राजा को साधारण और अनाम प्रजा के विश्वासों की रक्षा करनी चाहिए। सीता का कहना है कि-

मैं या
कोई भी
राष्ट्र न्याय और सत्य से बडा नहीं है।

सीता वास्तव में भारतीय आदर्श नारी की भूमिका यहाँ निभाती है। वह भारतीय संस्कृति के उत्तुंग आदर्श अर्थात् त्याग और समर्पण की मूर्ति बन जाती है।

चौथा सर्ग जिसका नाम है- प्रति इतिहास और निर्णय। इसमें राज्य दरबार को प्रस्तुत किया गया है। सीता के विषय पर यहाँ विचार-विमर्श चलता है। सबसे पहले लक्ष्मण चर्चा शुरु करते हैं और कहते हैं कि धोबी का आरोप उत्तरदायित्वपूर्ण नहीं था। इसका कोई प्रयोजन नहीं होता है, क्योंकि सीता का परीक्षण हो चुका है। इसलिए धोबी

के इस तर्जनी को छोड दें। अगर हम यह मान लें कि उसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, फिर भी उसे यह देखाना चाहिए था कि आधारहीन अभिमतों को सार्वजनिक रूप से वाणी दे। लक्ष्मण, धोबी का पूर्ण रूप से विरोध करते हैं। वे उसे राजद्रोह मानते हैं। लेकिन राम तकों के द्वारा लक्ष्मण के अभिमतों को तोडते हैं और साधारण जन के पक्ष में निर्णय लेते हैं। वे राज्य और न्याय को मानवीयता के आधार पर देखते हैं। उनका मानना यह है कि सीता के चरित्र पर संदेह करना कभी भी राजद्रोह नहीं है। वे अंत में यह निर्णय सुनाते हैं कि कल सूर्योदय के साथ ही सीता वनवास के लिए प्रस्थान करेंगी।

पाँचवीं तथा अंतिम सर्ग का नाम है- 'निर्वेद विदा'। सीता को लेकर लक्ष्मण सूर्योदय के समय निकलते है। दूर जाते रथ को राम अन्यमनस्क देख रहे हैं। राम को लगता है कि सब निर्णय हमेशा वह व्यक्ति-निर्णय है जो समष्टि के पक्ष में है, शायद यह मानव-नियति है-

कर्म
निर्मम कर्म
असंग कर्म करता चला जाए।

अंतिम सर्ग में राम का अन्तर्द्वद्व प्रस्तुत किया गया है। यह द्वंद्व, व्यक्ति और सामूहिक व्यक्ति के बीच निरंतर चलता रहता है।

यह नाट्य-काव्य चिन्तन प्रधान एवं विचार प्रधान है। कथावस्तु में नाटकीयता लायी गयी है। राम के स्वगत कथन के द्वारा घटना का ज्ञान होता है। इसकी कथा में प्रवाह रहता है। इसमें कथा से अधिक विचारों को महत्व दिया गया है। कवि ने अपनी कल्पना के द्वारा कथा को काफ़ी समृद्ध किया है।

इसमें जो पात्र प्रस्तुत किए गए हैं वे काव्य के उद्देश्य की सफलता के लिए सहायक सिद्ध हुए हैं। मुख्य पात्र ये हैं- राम, लक्ष्मण, भरत, मंत्री और सीता। एक अनाम पात्र इसमें आया है, वह धोबी है जिसको घटना का कारण बताया गया है, लेकिन वह काव्य मे कहीं भी नहीं आता है। उसका सिर्फ जिक्र ही है और अन्य पात्रों के द्वारा उसकी चर्चा की जाती है।

राम इसमें प्रमुख पात्र है, साथ ही साथ वे एक प्रतीक भी हैं। वे एक ऐसा राजा है जो जनता की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर विश्वास करते हैं। वे लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी आस्था रखते हैं। वे मानवतावादी हैं। वे प्रति इतिहास को स्वीकार करने के पक्ष में हैं। वे जनता की अभिव्यक्ति की आज़ादी को कुचल डालने के विपक्ष में खडे मिलते हैं। सत्ता के द्वारा जनमत को दबाना नहीं चाहिए, यही उनका मानना है।

कवि इसमें बरकरार समय की ओर संकेत करते हैं। यह समय, भारत में आपातकाल का समय था और तब अभिव्यक्ति के लिए आज़ादी नहीं थी। आपातकालीन आतंक की स्थिति पर कवि राम के द्वारा टिप्पणी करते है:

लक्ष्मण
गूँगेपन से कहीं श्रेयस्कर
वाचालता/जिस दिन
मनुष्य अभिव्यक्तहीन हो जाएगा
वह सबसे अधिक
दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा।

राम वैयक्तिकता की अपेक्षा सामूहिकता को महत्वपूर्ण मानते हैं। जब लक्ष्मण, भरत और मंत्रीमण्डल ने धोबी को राजद्रोही ठहराया तो राम कहते हैं कि राजद्रोह राज्य के विरुद्ध होता है, सीता या राम राष्ट्र नहीं है। अधिपति होने का अर्थ राजा है, पर राष्ट्र नहीं है। अगर राजा राष्ट्र बनेगा तो वह इतिहास की गलत परंपरा होगी।

इस नाट्य कृति में मुख्य नारी पात्र 'सीता' है। सीता के चरित्र में भारतीय नारी के आदर्श को प्रस्तुत किया गया है। वह पति धर्म को मानती है। त्याग और सहनशीलता उनके दो गुण है। सीता न्याय और सत्य जैसे उच्चतर जीवनादर्शों की प्रतीक है। वे सामाजिक न्याय के लिए अपने व्यक्तिगत रागात्मकता को त्याग देती है। जब राम ने उसे सामाजिक न्याय को समझाने की कोशिश करते है तब वह कहती है कि उसे इसका पूर्वाभास था। वह जानती थी कि राम इतिहास पुरुष है और वह इतिहास पुरुष के पार्श में खडी केवल प्रतिमा है। वह जानती है कि राम इतिहास को समर्पित है। अतः इतिहास-पुरुष को वैयक्तिक नहीं होना चाहिए। सीता राम से कहती है:

इतिहास ने
यज्ञ पुरुष को कब एकांत दिया?
राजभवनों में
व्यक्ति नहीं
इतिहास पुरुष चला करते है आर्यपुत्र?

सीता आगे कहती है कि राष्ट्र, न्याय और सत्य से बढकर कोई बडा नहीं है। सीता आसन्न मातृत्व की संकट की स्थिति में भी कठिन से कठिन परीक्षा देने के लिए तैयार होती है। उसका कहना है:

साधारणता के इस नारायण को
आर्यपुत्र
न्याय के प्रति नारायण की अपेक्षा है

और मुझे भी

सीता की समझ अपार है। सीता अपने बारे में नहीं सोचती है। जनता का विश्वास उनके लिए मुख्य है। सीता ने ऐसा कहकर नारी के चरित्र को अधिक दृढ बनाया है।

अभिनय की दृष्टि से भी यह काव्य नाटक सफल है। संवादों का उचित उपयोग किया गया है। लाक्षणिकता का उपयोग करके कथ्य का संप्रेषण सुगम बनाया गया है। भाषा, इसका सरल और बोधगम्य है। नाटकीयता, प्रश्न तथा तर्क-शैली कवि की रचना की विशेषता है। वे प्रकृति के विभिन्न बिम्बों का उचित उपयोग किया है। पात्रों को प्रतीक बनाया गया है। अभिव्यंजना की दृष्टि से भी यह एक सफल नाट्य काव्य है।

Model Questions and Answers

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1. पर्वतों को काटकर सडकें बना देते हैं वे।
   सैकडों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे
   गर्भ में जलराशि के बेडा चला देते हैं वे
   जंगलों में भी महामंगल रचा देते हैं वे
   भेद नभतल का उन्होंने है बहुत बतला दिया
   है उन्होंने ही निकाली तार की सारी किया

प्रस्तुत काव्यखण्ड 'कर्मवीर' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस कविता का कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔथ' है। कवि इसमें कर्मवीर के चरित्र की विशेषताएँ बताते हैं।

कवि का कहना है कि कर्मवीर पर्वतों को काटमर भी सडकें बना देते हैं, मरुभूमि में नदियाँ बहाते हैं और जंगलों में महामंगल रचा देते हैं। कहने का मतलब है कि कर्मवीर के लिए असाध्य काम कोई भी नहीं हैं। वे अनंत आकाश के रहस्यों को भी ढूँढ निकालते हैं। नक्षत्रों के बारे में वे बताते हैं। ऐसा, कर्मवीर का चरित्र साहस का है।

'कर्मवीर' शीर्षक कविता उस समय लिखी गयी थी जब भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा था। आज़ादी की लडाई लडने के लिए देश को कर्मवीरों की ज़रूरत थी। जनता में कर्मवीरों को जगाना कवि का उद्देश्य था। कवि ने इस कविता के द्वारा देश की मांग जो कर्मवीरों को पैदा करना है उसके लिए सर्जनात्मक प्रयास किया है। सरल भाषा का उपयोग करके कविता के विषय को कवि ने संप्रेषित किया है। कविता में जनता के उत्साह को उकासाने का कार्य हुआ। उद्देश्य की दृष्टि से यह कविता एक अहं उपलब्धि है।

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

भेडिया गुर्राता है
तुम मशाल जलाओ।
उसमें और तुम में
यही बुनियादी फ़रक है
भेडिया मशाल नहीं जला सकता।

ये पंक्तियाँ हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की है। उनकी प्रसिद्ध कविता 'भेडिया-२' का अंश है यह। इसमें कवि ने 'भेडिया' के द्वारा शोषक और शोषितों के बीच का संघर्ष उतारा है।

कवि कहते है कि जब भेडिया गुर्राता है तब मशाल उठाना चाहिए। भेडिया मशाल नहीं उठा समता है, पर तुम मशाल उठा सकते हो।

इसमें भेडिया शोषकों की प्रतीक है और 'तुम' शोषिता का प्रतीक है। भेडिया पहले गुर्राकर 'तुम' को भयभीत कराएगा। तब 'तुम' का कर्तव्य है मशाल उठाना। मशाल से भेडिया डरता है। यहाँ 'मशाल' क्रांति का प्रतीक है। क्रांति के द्वारा ही शोषकों को भगाया जा सकता है। कवि इन प्रतीकों के द्वारा वर्गसंघर्ष की ओर संकेत करते हैं।

कविता की भाषा सांकेतिक है, लेकिन जल्दी समझ में आएगा। प्रतीक जो इसमें प्रयुक्त किए गए है वे शक्तिशाली है। काव्य में संप्रेषण के लिए इशारेदार शब्दों का प्रयोग किया गया है। यह कविता अपने शिल्प में श्रेष्ठ नज़र आती है। गंभीर बातों की सरल अभिव्यक्ति कविता की एक बडी विशेषता है।

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

आह! लेकिन
स्वार्थी कारख़ानों का तेजाबी पेशाब झेलते
वैंगनी हो गई तुम्हारी शुभ्र त्वचा
हिमालय के होते भी तुम्हारे सिरहाने
हथेली भर की एक साबुन की टिकिया से
हार गई तुम युद्ध

ज्ञानेन्द्रपति समकालीन कवि हैं। उनकी कविताएँ 'समकालीन कविता' का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनकी एक प्रसिद्ध कविता है नदी और साबून इसमें कवि ने पारिस्थितिक मुद्दे को उतारा है।

कवि बताते हैं कि नदी का प्रदूषण हो गया है। प्रदूषण सबसे अधिक कारखानों के कारण हुआ है। फाक्टरियों से जो मलिन वस्तुएँ नदी में छोडी जाती है उनको कवि 'तेजाबी पेशाब' कहकर पुकारते हैं। नदी की स्वच्छ त्वजा कारखाने के मलिन जल के कारण विकृत हो गयी है। नदी सबकुछ सहनेवाली है। लेकिन साबुन की टिकिया के साथ वह हार गयी।

यह कविता शक्तिशाली अभिव्यक्ति है। अभिव्यक्ति की दृष्टि से इस कविता का महत्व उत्तुंग शिखर पर खडा है। कविता इशारेदार है। इशारों में मुद्दा पूर्ण अभिव्यक्ति पाता है। 'हार गयी तुम युद्ध' में कविता की संवेदना समृद्धि पाती है।

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

इतिहास
खड्ग से नहीं
मानवीय उदात्तता से लिखा जाना चाहिए।

यह काव्यभाग नरेश मेहत्ता का नाट्य-काव्य 'प्रवाद-पव' से लिया गया है। यह काव्य रामय की उस घटना के आधार पर लिखा गया है जो एक धोबी के द्वारा सीता के चरित्र पर प्रश्नचिन्ह लगाया गया था। अग्निपरीक्षा सीता पर की गयी थी। फिर भी उसकी चरित्र-शुद्धता पर सवाल करना लक्ष्मण की दृष्टि से राजद्रोह है। लेकिन राम इसे स्वीकारते नहीं है।

राम का विचार है कि इतिहास खड्ग से नहीं लिखा जाना चाहिए बल्कि मानवीय उदात्तताओं से लिखा जाना चाहिए। व्यक्ति चाहे राजा हो, महान हो, पर वह मानवीय उदात्तताओं से परे नहीं है।

इसमें कवि अपने समय की राजनैतिक वातावरण की ओर भी इशारा करते हैं। जब यह काव्य लिखा गया था तब भारत में आपातकाल की भी घोषण की गयी थी। देश में अभिव्यक्ति का स्वातंत्र्य हडप लिया गया था। सर्वत्र अराजकता का नृत्य चल रहा था। इसलिए उपयुक्त कथन बहुत ही प्रासंगिक है।

II विस्तृत उत्तर लिखिए

1. 'जनतंत्र का जन्म' कविता के द्वारा कवि दिनकर क्या बताना चाहते हैं?

रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित कवि है। उनकी एक प्रसिद्ध कविता है "जनतंत्र का जन्म"। इस कविता में राष्ट्रीय मुक्ति की भावना का स्वर मुखरित है। देश में जनतंत्र शासन आने की प्रबल इच्छा इसमें प्रकट की गई है। कवि का मानना है कि जनतंत्र के द्वारा व्यापक परिवर्तन लाया जा सकता है।

जनतंत्र समय के रथ के समान है, अतः उसे हमें रास्ता देना चाहिए। राजा का शासन अब समाप्त हो जाएगा। कवि कहते हैं:-

दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन ख़ाली करें कि जनता आती है।

जनतंत्र शासन में जनता राजा है, शासक उनके सेवक हैं। अर्थात् जनता ही सब कुछ है। अब जनता पर जो शोषण चल रहा है वह समाप्त हो जाएगा।

अब देश में जनतंत्र का आगमन हो रहा है। जनता के हुंकारों का समय है। राज-सत्ता के बडे-बडे महलों की नीव नष्ट हो रही है। समय परिवर्तन के लिए तैयार बैठा है। जनता को रोकने के लिए कोई भी शक्ति अब नहीं रह गयी है। कवि इस बात को यों सूचित करते हैं:

जनता की रोकें राह, समय में ताव कहाँ
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुडता है।

भारत में सबसे बडा जनतंत्र आ पहुँचा है। तैंतीस करोड जनता के हित का सिंहासन अब तैयार करने का यह समय है। अब राजा के स्थान पर जनता का अभिषेक चलेगा।

इस प्रकार कवि जनतंत्र व्यवस्था के गुणों का विवरण दे रहे हैं। यह व्यवस्था जनता के पक्ष में खडी होती है। अब राजदण्ड के स्थान पर फ़ावडे और हल रहेंगे।

इस कविता में कवि राजनैतिक परिवर्तन को काव्य संवेदना में बाँधा है। जनतंत्र के आगमन की घटना को महान बताया गया है। जनतंत्र की शक्ति को पहचानने का आह्वान करते हैं। समय के अनुसार सत्ता में परिवर्तन की आवश्यकता पर कवि ज़ोर देते हैं। जनतंत्र को जनता की संवेदना में समावेशित करने का प्रयास कविता का केन्द्रीय उद्देश्य है।

2.विस्तृत उत्तर लिखिए

लकडी का रावण रावण के द्वारा कवि मुक्तिबोध क्या कहना चाहते हैं ? अपने शब्दों में उत्तर लिखिए ।

गजानन मधव मुक्तिबोध हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठित कवि है । उनकी एक प्रसिद्ध कविता है लकडी का रावण । इसमें उन्होंने जनक्रांति और सत्ता की पराजय को प्रस्तुत किया । मुक्तिबोध मार्क्सवादी होने के कारण जनक्रांति और सर्वहारा की विजय उनका प्रिय

विषय रहा । यह कविता बिम्बात्मक एवं प्रतीकात्मक शैली में लिखी गयी है । इस कविता में कई बिम्ब प्रस्तुत किए गए हैं जैसे पहाड का उत्तुंग शिखर, उसके नीचे कुहरे, कुहरे के अंदर हलचल आदि । प्रतीक के रूप में लकडी का बना रावण आया है जो उत्तर भारत में रामलीला त्योहार के अवसर पर जलाया जाता है ।

कवि कहते हैं कि पर्वत के तिकोना शिख़र दिख़ाई दे रहा है । उसके नीचे कुहरे पडे हैं । कुहरे के ऊपर एक उत्तुंग शिखर है । यह पर्वत शिखर और नीचे का कुहरा उस व्यवस्था की सेकेत कर रहे हैं जिसमें शोषक और शोषित दोनों रहते हैं । सत्ता और पीडित जनता, बरकरार वर्गविभाजित व्यवस्था का चरित्र है । सत्ता की स्थिति इस प्रकार व्यक्त किया गया है :

..... उस कुहरे से बहुत दूर
ऊपर उठ.....
पर्वतीय ऊर्ध्वमुखी नोक एक
मुक्त और समुत्तुंग !!

सर्वहारा की विजय उनका प्रिय विषय

सत्ता को लग रहा है कि वह सर्वशक्तिमान है । उसके आकारविहीन कंधों पर नीला आकाश विराजमान है । यह शक्ति ऊपर से देख रही है कि नीचे कुछ हलचल चल रहे हैं । पहले उसे लगा कि यह भ्रम है । लेकिन बाद में पता चला कि यह भ्रम नहीं है, जनशक्ति आगे बढ रही है । सत्ता अब डरने लगी । वह जनशक्ति का संहार करना चाहती है :

मेरी इन भुजाओं से बन जाओ
ब्रह्मशक्ति !
पुच्छल ताराओं
टूट पडो बरसो
.....
प्रहार करो उनपर,
कर डालो संहार

जनशक्ति सत्ता के नभचुंबी शिख़रों तक घेरकर पहूँच गयी है । सत्ता जनशक्ति से घिरी हुई अकेली रावण का, बाँस और कागज के पुट्ठे का जैसा बना है ।

जनशक्ति ने सत्ता पर आक्रमण शुरु किया जैसे रावण के पुतले पर आग लगाया गया है । अब स्थिति यहाँ तक पहूँच गयी है कि बेबस सत्ता जडवत् ख़डी है । स्थिति ऐसी बन गयी है कि सत्ता अब गिरी या तब गिरी या इस पल या उस पल । जनशक्ति की विजय सुनिश्चित हो गयी ।

मुक्तिबोध ने इस कविता के द्वारा जनक्रांति की सृजनात्मक अभिव्यक्ति दी है । इसमें वर्गसंघर्ष को सृजनात्मक वाणी प्रदान की गयी है । वर्गविभाजित समाज में वर्गसंघर्ष की अनिवार्यता की ओर इशारा करना कवि का अहं उद्देश्य है ।

Model Question Paper
Sixth Semester B.A. Hindi Degree (SDE) Examination

1. लघु उत्तर लिखिए (एक या दो वाक्यों में) -

1. सुमेलित कीजिए :

1 हरी घास पर क्षण भर	1.पंत
2 कामायनी	2 अज्ञेय
3 पल्लव	3 दिनकर
4 उर्वशी	4 प्रसाद

2 मुक्तिबोध का पूरा नाम क्या है ?

3 नदी और साबुन शीर्षक कविता किसकी है ?

4 मैथली शरण गुप्त जी की राय में मनुष्य कौन है ?

5 महादेवी वर्मा एक ---------- कवयित्री है ।
(प्रगतिवादी, छायावादी, प्रयोगवादी, मार्क्सवादी)

6 देवी की अग्नि की परीक्षा हो चुकी है - यह किसने कहा ?

7 सीता के चरित्र के ऊपर सवाल किसने किया ?

8 धूमिल की कविता इनमें कौन-सी है ?
(नदी के द्वीप, भेडिया, मनुष्यता, लकडी का रावण)

9 अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध की रचना निम्नलिखितों में कौन-सी नहीं है ?
(चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, पल्लव, प्रियप्रवास) (9X=9weightage)

किन्हीं पाँच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए

10 साँप कविता का व्यंग्य क्या है ?

11 आसमानी रामीरो, बिजलिय,
मेरी इन भुजाओ बन जाओ
ब्रह्मशक्ति ।
पुच्छल ताराओ.
टूट पडो बरसो

-सप्रसंग व्याख्या करो

12 मगर सुनो! तुमने अपने कुत्ते को
दिन में क्यों खोल दिया है
इससे पहले कि वह पकड लिया जाय
और चीर-भाड की किसी धारणा को
साबित करते हुए
आस्पताल में तुम हलाल हो

- सप्रसंग व्याख्या कीजिए

13 पथ को न मलिन करता आना
पद-चिन्ह न दे जाता जाना
सुधि में अगम की जग में
सुख की सिहरन हो अन्त खिली

- सप्रसंग व्याख्या कीजिए

14 नहीं कारण कि मेरा हृदय उथलाया कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है ।
बल्कि केवल यही
ये उपमान मैल हो गये हैं ।

- सप्रसंग व्याख्या कीजिए

15 अनेक बार
ऐसी ऐतिहासिक अनाम तर्जनी में भी
इतिहास को
प्रति इतिहास में बदल देने की शक्ति होती है ।

- सप्रसंग व्याख्या कीजिए

16 चाहे वह देवभाषा हो या
माटी-भाषा,
मनुष्य का भाषाहीन हो जाना
सृष्टि का
ईश्वरहीन होना होगा लक्ष्मण ।

- सप्रसंग व्याख्या कीजिए

(5x2=10 weightage)

किन्हीं दो प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए -

17 जनतंत्र का जन्म कविता के द्वारा कवि क्या बताना चाहते है ?
समीक्षात्मक उत्तर लिखिए ।

18 लकडी का रावण शीर्षक कविता वर्गसंघर्ष की ओर इशारा करती है ।
विस्तार कीजिए ।

19 प्रवाद पर्व नाट्य काव्य का उद्देश्य क्या है ? एक लेख लिखिए ।

(2x4=8 weightage)

.....